National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-9040
Received: 10-09-2021, Accepted: 26-09-2021, Published: 11-10-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 1-4

नवजागरण की अवधारणा और निराला का काव्य

डॉ. संतोष रामचंद्र आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जालना, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
पूर्व साहित्य राज दरबारों में ही सिर झुका रहा था, किन्तु अब साहित्यकार समाज से जुडकर समाज में फैले आडम्बर, रूढ़ि, वर्ण–वर्ग भेद, कुरीति, सती प्रथा, बाल–विवाह, आदि का विरोध करने लगे। विधवा विवाह का समर्थन और सामंती व्यवसथा,उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद का विरोध प्रखर हुआ। देश में स्वराज्य की इच्छा जगी। व्यापक स्तर पर जन–आंदोलन शुरू हुए । लोग तार्किक होने लगें और ऑख बंद करके किसी पाखण्ड को मानने की जगह उस पर तर्कपूर्ण विचार करने लगे। भारत में यह चेतना हर जगह, हर समाज में अलग–अलग वक्त पर आयी किन्तु सबका उदेश्य सुधार ही लाना था। आगे चलकर जनता में भाईचारे की भावना को भी साहित्य द्वारा सभी में विकसित करने की कोशिश भी की गई। इस भावना को विकसित करने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान द्विवेदी युगीन कवियों का रहा है।

मूल शब्दः पतन– हानि, शत–शत– हजारो वर्ष, सिंहनाद– गर्जना

प्रस्तावना
निराला के काव्य में कुछ पृष्ठभूमि का अवलोकन करने से पहले उस पर सूक्ष्म दृष्टि डाल लेना भी आवश्यक है क्योंकि जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति अपने घर परिवार में घटित होती गतिविधियों से अनभिज्ञ नहीं होता। उसी प्रकार कोई भी कवि या लेखक अपने समय या परिस्थितियों में घटित होती सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि समस्याओं से अछूता नहीं रहता है। अर्थात वह उनसे पूर्णता परिचित होता है, उन समस्याओं का उद्घाटन करने के साथ–.साथ रचनाकार अपने भावों विचारों के माध्यम से उनका निराकरण करने का पूर्ण प्रयत्न भी करता है। निराला उन्हीं प्रमुख रचनाकारों में से एक है जो अपने समय की समस्याओं के समाधान हेतु पूर्ण रूप से तत्पर परिलक्षित होते हैं। निराला के समय में ही नवजागरण उसकी पृष्ठभूमि है और स्वाधीनता आंदोलन उसका वर्तमान है। रचनात्मक साहित्य में उनके सरोकार संवेदन के रूप में व्यक्त होते हैं और संपादकीय टिप्पणियों और लेखों में विचारों के रूप विचार और सर्जन के बीच कोई कोई विरोध नहीं है दोनों में एक अन्य सूत्र है इसकी पहचान उसकी विचार व्यवस्था की मुकम्मल समाज के लिए जरूरी है।

स्वतंत्रता
उस समय की माँग व्यक्ति की स्वतंत्रता थी, जिसकी पुकार हमें भारतेंदु युग से ही सुनाई पड़ती है यह उसका प्रबल स्वर छायावाद में परिलक्षित होता है। अपने सहयात्री रचनाकारों के विचारों की तरह निराला भी अपने समय के जागरूक कवि थे, क्योंकि वह समय शुभ और उद्विग्न का था, जिसमें सबसे बड़ी समस्या बंधन की थी। इसलिए उस बंधन से मुक्त ही कवि का मुख्य रहा है, निराला की दृष्टि में मुक्ति केवल भारतीयों तक सीमित नहीं है। अपितु उनकी दृष्टि विश्व मानव को भी समेटे हुए है। इस मुक्ति को कवि ने संविधान रूप में कविता की मुक्ति के रूप में भी देखा ''मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है''[1] निराला के कवि कर्म और जातीय आवेदन के बीच तारतम्य है, निराला अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों से पूर्णता परिचित थे। उनके निर्माण हेतु उन्होंने अपना पूर्ण सहयोग दिया उनकी आत्मा राष्ट्र के उत्थान की चिंता में उसे सजाने संवारने को नव निर्माण करने में संलग्न थी उनकी राष्ट्रीय चेतना अत्यंत जागृत थी इसी चेतना के द्वारा कवि निराला ने स्वर्णिम अतीत के गौरव गीत गाए हुए राष्ट्र को जागृत करने के लिए जागरण का गीत के पंख बजाये राजनीति की सड़ी–गली सामाजिक, धार्मिक व्यवस्थाओं की पोल खोली दीन–दुखियों के प्रति राष्ट्रीय चेतना प्रचारात्मक नहीं थी, अपितू रचनात्मक सांस्कृतिक थी वे कहते हैं।

"भारती, जय विजय करें, करक षरय– कमलधरे। लंका पददल–शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल,
धोता शुचि चरण–युगल, स्तव कर बहु–अर्थ–भरे। मुकुट शुभ्र हिम–तुषार, प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएं उदार, शतमुख– शतरव–मुखरे।"[2]

निराला ने प्रेरणा के दृष्टिकोण से देश के महान सुपुत्र तुलसीदास के जीवन वृतांत को अपने काव्य का विषय बनाया है और इसी कविता में उन्होंने घोर दास्तां से युक्त जनता का चित्र भी खींचा है। देश के सांस्कृतिक और राजनीतिक पतन से कभी भी हल हो जाता है और इस अंधकार से नष्ट होने की उसकी महत्वाकांक्षा को उत्थान अर्थात बंधन से मुक्त होने का संदेश देती है। इसी प्रकार 'महाराज शिवाजी का पत्र' नामक कविता में भी स्थानीय जागरण का स्वर है। इसी कविता के प्रथम भाग में जहां कवीता में स्वतंत्रता व्यक्त करता है। अर्थात स्वतंत्रता की भूमिका बांधता है, वही भाग दो में वह मनुष्य को स्वप्न में भी पराधीन है। उन पर शोक व्यक्त करता है यह कितनी बड़ी दुर्बलता है, आगे की पंक्तियों में कवि भूकंप का सामना बांधा हुआ जागरण का स्वर प्रखर करता है–

"जागो, जीवन– धनीके। विश्व–पण्य–प्रिय वणिकै ।
दुख–भार भारत तम–केवल, वीर्य–सूर्य के ढके सकल दल,
खोलो उशा–पटल निज कर आयी,
छविमयि दिन–मणिके।"[3]

'स्वाधीन' होने की प्रफुलता एवं तत्परता 'कैसी हवा चली' में कवि निराला ने गांव.–गांव में स्वतंत्रता प्राप्त की हवा से धूर्तो की कलाई खुल गयी, जिससे व्यक्ति अपने कर्म एवं कर्तव्य के प्रति तत्पर हो गया है–

शोषकों से उत्पन्न शोषितों की समस्याओं का उद्घाटन

नवजागरण काल में शोषित वर्ग का शोषण धनिक वर्ग में जमींदारों के द्वारा हो रहा था। जमींदार लगान पर लगाम लगाकर गरीबों को हनन कर रहे थे। उनके समस्त कार्य अंग्रेजी शासन की नीतियों के ही परिणाम थे। "लेकिन टैक्स कौन लगाता था, किसने मना किया था, देश कौन उजाड़ रहा था। यह देखना मुश्किल नहीं है कि यह सब काम भारत में अंग्रेजी राज्य कर रहा था। वास्तव में भारत दूर्दशा अंग्रेजी राज्य का ही दूसरा नाम है"[4]

जमींदार साहूकार एवं धनिक वर्ग कृषक को मजदूरों एवं निर्धनों का शोषण विभिन्न माध्यमों से कर रही थी। इस मिशन के प्रतिरोध में कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाजवाद को स्थापित किया और पूंजीवाद या साम्राज्यवाद के उत्पन्न होने के कारण एवं खंडन के प्रति जनता को जागरूक करने के लिए अपनी लेखनी के माध्यम से उन्हें उद्धृत करने का प्रयास भी किया है–

"अगर किसी ज्योत या बाग की मेड़ को
छूता भी पेड़ हो किसान भी अधिकार के लिए गूला उस पेड़ के तने पर रखकर वह डॉट डॉट कर देखता है।,
आंखों में उस अवसर पर, धुंधी छा जाती है,
आदमी जैसे कमान, बन जाता है किसान।

पास का मेढ़क नाले के पानी से उठकर मूत मूतकर छलांग मारता चल गया"[5]

शोषित और शोषक का विराट स्वरूप निराला के कृषकों की अवस्था में अत्यंत स्पष्ट दिखाई देता है इसी कारण उनके काव्य में जगह–जगह पर कृषकों की दयनीय अवस्था दिखाई देती है। इस अवस्था में परिवर्तन या क्रांति लाने के लिए कभी प्रकृति के विभिन्न उपादानों के माध्यम से चारों ओर व्याप्त है। इस अवस्था में उथल–पुथल कर देना चाहता है। "निराला ने भी अपने काव्य और कथा साहित्य में क्रांतिकारियों का चित्रण किया है। दोनों में अंतर यह है कि निराला के क्रांतिकारियों का कार्यक्षेत्र हमेशा गांव होता है क्रांति की सार्थकता है किसानों की मुक्ति में अंग्रेजी राज और जमीनदारी शासन के दोहरे उत्पीड़न से जो किसान को मुक्त करें वही सच्चा क्रांतिकारी है"[6] अतः निराला अपने काव्य में कृषक को शोषकों की समस्याओं का उघाटन ही नहीं करते, बल्कि शोषको के द्वारा उनके प्रति हो रहे अत्याचारों के प्रति क्रांति के लिए प्रेरित भी करते हैं, कभी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार समाज की समस्याओं को समूल नष्ट कर देना चाहता है और समस्त जग में नवीन जागृति प्रसारित करने के लिए प्रेरित होता है।

नारी के वर्चस्व पर बल

कवि निराला के मन में अनेक प्रकार के सवाल उठने लगते हैं, तो उचित होते हैं क्योंकि जो प्रकृति उसके दुःख को सुन सकती है। वह व्यक्ति स्वरूप होकर उसके दया नहीं दिला सकती। इसलिए निराला यहां विधवा समस्या का समाधान तो नहीं कर सकते बल्कि उसके वर्चस्व की और आवश्यक संकेत करते हैं, अर्थात कविता का अर्थ विधवा के प्रति समाज में सम्मान और अन्य नागरिकों के समान व्यवहार के आग्रह के लिए यह है, कुछ इस तरह की समस्या कवि की प्रारंभिक कविता 'बाबा और नाती' में भी दृष्टि होती है इसमें नैतिकता के संवाद के द्वारा बाबा को सही राह पर आने की फटकार दी गई है–

'आस वृथा करते विविह की, ब्याह नहीं होनि दूँगा।
एक बहिन को जीवनभर सिर पीट नहीं रोने दूंगा।
विधवाओ के ब्रह्मचर्य की ज्योति नहीं खोने दूंगा।
राह चलो बाबा, तुमको सुख सेज नहीं सोने दूंगा'[7]

नारी की सेवा परायण भाव को दर्शाते हुए कवि इस कविता में अप्रत्यक्ष रूप से, उसकी निस्वार्थ सेवा कहीं रूप सौंदर्य में कलंकित हो गई है, नारी को अभियुक्त करता है अर्थात इस कविता में कवि समाज में स्थापित रूप सौंदर्य की अवहेलना कर उसके गुणों सेवा–भाव आदि को स्थापित करना चाहता है।

रूढियों का खण्डन

नवजागरण की एक प्रमुख प्रवृत्तियों मे रूढ़ियो का खंडन ही है क्योंकि भारतीयों के परतंत्र होने में कहीं न कहीं उनकी मानसिक ग्रस्तता अर्थात और रूढ़ियों में विश्वास था। इस मानसिकता को जब तक दूर नहीं किया जाता स्वतंत्र भारत की परिकल्पना आज कोसों दूर होती है, यह सर्वविदित है कि निराला स्वभाव अत्ताह कांतिकारी था। उनका यह क्रांतिकारी स्वभाव बाल्यावस्था की 'बसुरिया' मुसलमान स्त्री की घटना से लेकर युवावस्था की अधिकार के बीच को रूढ़ि तक लेने में परिलक्षित होते हैं। इस क्रांतिकारी स्वभाव का परिणाम निराला की कविताओं में रूढ़ियों के खनन के रूप में देखा जा सकता है और उड़ने के लिए उन्होंने मुक्ति की भावना की आकांक्षा की है। ''निराला को समझने के लिए निराला के मुक्तक छंद को उसकी व्यापक अर्थ बता में देखने की जरूरत है। वह बार–बार मुक्त शब्द का प्रयोग करते हैं, यह मुक्ति केंद्र के बंधनों तक सीमित नहीं है, यह निवेशक बंधनों से लेकर भव बंधनों की मुक्ति तक फैली हुई है इसमें सामाजिक सांस्कृतिक रूढ़ियों से मुक्ति है वर्ग वर्ग भेद से मुक्ति है सामंती साम्राज्यवादी अमानवीय अत्याचारों से मुक्ति है यही भाषा कवि निराला मुक्ति की करते''[8]

ताल–ताल से रे सदियों के जकड़े हृदय–कपट
खोल दे कर–कर कठिन प्रहार आये अभ्यंतर संयत चरणों से नव विराट,

रूढ़ियों का खंडन निराला अपनी पुत्री की स्मृति में रचित षोक–गीत में भी पूर्णतः स्पष्ट करते हुए दिखाई देते है। 'जन्मपत्री' में दो विवाह लिखे थे इस रूढ़ि के विरुद्ध कवि का अपने पुत्र के हाथों में जन्मपत्री खोलने के लिए दे देना उसके द्वारा टुकड़े–टुकड़े होने पर निराला के भाव हर्ष के रूप में देखने को मिलना यह बातें हमें दिखाई देती है।

जातिवाद का विरोध

नवजागरण काल में जातिवाद की समस्या भी प्रमुख थी, यह अत्यंत संकीर्ण रहती थी। इसका अगर खंडन–मंडन नहीं होता तो भारत आज भी मंडूक ही बना रहता। प्रगति का पक्ष भारतीयों से कोसों दूर होता 'भारतीय समाज के आधुनिक समाज बनने में यहां सबसे बड़ी बाधा जाति प्रथा आ रही है'[9]

निराला काव्य में जाति प्रथा का खंडन–मंडन जगह–जगह पर देखने को मिलता है, तथा साथ ही हम उनके काव्य में परंपरा पर बल भी देते हैं, जिसका प्रमुख कारण जाति–पाति का भेद उठाने के लिए विधवा विवाह कराने के लिए स्त्रियों में शिक्षा प्रचार करने के लिए हिंदुस्तान की ही संस्कृति में काफी तत्व मौजूद थे।

भिक्षावृत्ति पर दृष्टिपात

निराला के काव्य में वेश्यावृत्ति के दर्शन हमें जगह–जगह पर देखने को मिलते हैं इसका प्रमुख कारण तत्कालीन परिस्थितियों का परिणाम रहा अर्थात नवजागरण काल कि वे परिस्थितियां जो अंग्रेजी शासकों द्वारा उत्पन्न की गई भाषा पर चोट करते हुए– डॉ रामविलास शर्मा ने दुर्भिक्ष का एक प्रमुख कारण विदेशी भाषा की महत्वता को माना है। जिसके प्रमाण के लिए उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र के लेखक को प्रस्तुत किया 'अंग्रेजों ने हम लोगों को विद्या अमृत पिलाया और उससे हमारे देश बंधुओं को बहुत लाभ हुए, इसे हम लोग नहीं करते परंतु उन्ही के कहने के अनुसार हिंदुस्तान की वृद्धि का समय आने वाला है तो एक तरफ रहा, पर प्रतिदिन

मूर्खता दुर्भिक्ष आता और दयनीय प्राप्त होता जाता है। अंग्रेजों ने उनको अपने विद्या की रुचि लगाकर राजनीति में उनका चित्रण को आकर्षण किया और सूविद्या और नदियां और यही कारण है कि हम लोग उनकी माया से मोहित हो गए और हम लोगों को अपनी हानी दृष्ट न पडी'[10]

'समर करो जीवन में जन के लिए कभी
पीछे न रहो गण के मन हे विदेश को नख वरो,
बड़े हाथ रोको न लुटो रोटी के कारण
छल छाया से तरो, न भय से तुम विदेश विचारों'[11]

तत्कालीन शासकों के अत्याचारों पर दृष्टिपात करती उनकी रचनाएँ हमारे मानविय जीवन में प्रकाश डालने का महान कार्य करती है, जिसके कारण व्यक्ति अपना रोद्र रूप धारण करके ज्वलीत होता है।

राष्ट्रीयता

नवजागरण काल में राष्ट्रीयता ही वह समाधान था, जो व्यक्ति को अपने शब्दों की पहचान कराने में सक्षम था, अर्थात देशभक्ति जागृत होने पर व्यक्ति पराधीनता के कारणों को जान सकता है। उनका विरोध कर राष्ट्रीय एकता का सूत्र समस्त देशवासियों में आजादी की अलख जगा सकती था, या अलख भारतेंदु युग की साहित्य से जखडी हुई निराला काव्य में और अधिक तीव्र होती हूई दिखाई देती है। राष्ट्रीयता का बोध देते हैं, मातृभूमि की वंदना करते हुए विश्व को संज्ञा देते हैं। जो भारतीय भैरव वाणी को शांत होता है अर्थात इस पंक्ति पर दृष्टिपात किया जाए तो निश्चित रूप से जो भैरव वाणी अर्थात क्रोध प्रलयंकारी राष्ट्रीय माध्यमिक होगी अर्थात अप्रत्याशित परिणाम को प्रकट कर सकती है।

'त्रिदष कोटि नर समाज, मधुर–कण्ठ–मुखर आज।
चपल चरणभंग नाच तारांगण सूर्यचंद्र।
चुम चरण ताल मार गरज जलधि मधुर मंद्र।
वधिर विष्व चकित भीत सून भेराव वाणी।
जन्मभूमि मेरी है जगत महारानी।। [12]

जलद का रूपक बांधकर कवि ने देश भक्तों की भक्ति का नमन जलद के प्रति में बखूबी किया है या कविता इसे राष्ट्रीय वीरों को समर्पित है जो विदेशी प्रलोभन ओ का तिरस्कार कर देश के उदार को सर्वोपरि मानते हैं इस कविता में निराला ने ग्रुप के माध्यम से देश भक्ति को देशवासियों से जागृत कराने का प्रयास किया है।

अतीत के प्रति गौरव

नवजागरण काल में अंग्रेजों ने भारत के मन में उनके अतीत या संस्कृति के प्रति घृणा के बीज बो दिए थे, जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय अपनी ही नजरों में स्वयं को हीन भाव से देखते थे। इस कुकृत्य से लाभ अंग्रेजों ने अपनी संस्कृति की जडे भारत में जमाने से लिया। उन्हीं पाश्चात्य जडों को उखाड़ने के लिए नवजागरण कालीन लेखको ने भारतीय के मन में अतीत के प्रति गौरव को जगाया। इस चली आ रही परंपरा को निराला काव्य में भी प्रश्रय मिला। कविता में निराला माध्यम बना भारतीयों को गौरवान्वित करते हैं यहां 'जागो फिर एक बार' में केवल प्रेरित करने का प्रयत्न करते हैं वही 'जागो फिर एक बार' दो में शोषको के प्रति जागरण का गीत गाया जा रहा है। उसका पूर्ण स्पष्ट रूप उभरता हुआ दिखाई देता है ।

"अवसर नहीं है यह लड़ने का आपस में
खाली मैदान पढ़ा हिंदुओं का महाराज बलिदान चाहती है जन्मभूमि,
खोलेंगे जान ले हथेली पर"[13]

कुछ इस प्रकार का उद्रवीग्न गीत शत–शत वर्षों का मन है। इसमें युगीन स्थिति का सचेत आकलन किया गया है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक गरिमा, आध्यात्मिक की पूजा और जीवन दर्शन मूल प्रेरक शक्ति बनकर हमारा कल्याण कर सकते हैं। अतः तभी निराला ने भी गौरवमई अतीत के गीत गाकर नवजागरण को पूर्ण अभिव्यक्त किया है।

कर्म वाद पर

निराशा के अंधकार में व्यक्ति अपने कर्तव्य से दूर भागता है और पलायनवादी बन जाता है। नवजागरण काल में भारतीयों की स्थिति उसी दिशा की ओर बढ़ रही है, उस अंधकार में ही दिशा से ज्ञान रूपी दिशा की ओर ले जाने का कार्य नवजागरण काल में लेखकों, कवियों ने गीता के के कर्मवाद पर बल देकर किया है। कर्मवाद पर नवजागरण का प्रभाव निराला के काव्य में भी देखने को मिलता है। 'दिल्ली' कविता में कवि जीवन संग्राम से जूझने के लिए भारतीयों में गीता के कर्मवाद सिद्धांत के द्वारा उत्साह भरता है।

'श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहां भारत में गीता–गीत–सिंहनाद
मर्मवाणी जीवन–संग्राम की–
सार्थक समन्वय ज्ञान–कर्म–भक्ति–योग का'[14]

कर्म के आधार पर ही महान से महान सिद्धि या कार्य पूर्ण होते हैं। इसलिए वे भारतीयों को कर्म करने के लिए सदैव प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष

कवि निराला ने नवजागरण काल में देश में हो रहे अंग्रेजों के अन्याय, अत्याचार के प्रति अपनी कविता के माध्यम से विद्रोह का स्वर उध्दबोधित किया और अपने काव्य के माध्यम से नवयुवको को प्रेरित करता हुआ दिखाई देता है। पाश्चात्य जडों को उखाड़ने के लिए नवजागरण कालीन लेखको ने भारतीय के मन में अतीत के प्रति गौरव को जगाया। इस चली आ रही परंपरा को निराला काव्य में भी प्रश्रय मिला। निराला यहां विधवा समस्या का समाधान तो नहीं कर सकते बल्कि उसके वर्चस्व की और आवश्यक संकेत करते हैं, अर्थात कविता का अर्थ विधवा के प्रति समाज में सम्मान और अन्य नागरिकों के समान व्यवहार के आग्रह के लिए यह है, निराला काव्य में जाति प्रथा का खंडन–मंडन जगह–जगह पर देखने को मिलता है, तथा साथ ही हम उनके काव्य में परंपरा पर बल भी देते हैं, भारतेंदु युग की साहित्य से जखडी हुई निराला काव्य में और अधिक तीव्र होती हूई दिखाई देती है। राष्ट्रीयता का बोध देते हैं, मातृभूमि की वंदना करते हुए विश्व को संज्ञा देते हैं। पाश्चात्य जडों को उखाड़ने के लिए नवजागरण कालीन लेखको ने भारतीय के मन में अतीत के प्रति गौरव को जगाया। इस चली आ रही परंपरा को निराला काव्य में भी प्रश्रय मिला।

संदर्भ सूची

1. सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली–1 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–5, 2014 भाग1 पृ 425
2. वही, भाग–1 वृ. 246–247
3. वही, भाग–1 वृ. 256
4. वही, भाग–1 वृ. 200–201, 16
5. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य–साधना, द्वितीय खण्ड, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2002 पृ. 22
6. सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली–2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–5, 2014 भाग1 पृ 137
7. वही, भाग–1 वृ. 46
8. वही, भाग–1 वृ. 62
9. विपाशा निराला अंक, द्वैमासिक पत्रिका, वर्ष 13 अंक–74 मई–जून 1997 सं. हरिवंश गर्ग, पृ–42

10. रामविलास शर्मा, भारतेंदु हरिश्चद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ 72
11. सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली–1 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–5, 2014 भाग1 पृ 142
12. वही, भाग–1 वृ. 39
13. वही, भाग–1 वृ. 164–166
14. वही, भाग–1 वृ. 215